Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 3

नीति के दोहे - रहीम

जन्म - सन् 1556 ई.
मृत्यु-सन् 1626 ई.
रहीम का पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। रहीम का जन्म सन् 1556 ई. में हुआ। इनके पिता बैरम खाँ ने मुगल बादशाह हुमायूँ की मृत्यु के बाद अकबर के संरक्षक का दायित्व निभाया था। रहीम बचपन से ही साहित्य-प्रेमी और बुद्धिमान थे। उन्हें अपने माता-पिता से वीरता, राजनीति. दानवीरता तथा काव्य जैसे गुण विरासत में मिले थे। रहीम का व्यक्तित्व बहुत प्रभावशाली था वे सामंजस्यवादी थे श्रीकृष्ण के प्रति भी उनकी अथाह श्रद्धा थी। उन्होंने अपने काव्य में रामायण, महाभारत, पुराण तथा गीता जैसे ग्रंथों के कथानकों एवं पात्रों का भी बखूबी उल्लेख किया है। इनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और शृंगार का सुन्दर समावेश मिलता है। रहीम को दोहा, सोरठा, बरवै तथा सवैया छंदों में विशेष महारत हासिल थी। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं- दोहावली. बरवै नायिका भेद, रास पंचाध्यायी, मदनाष्टक तथा नगर शोभा। अपने अनुभवों को उन्होंने जिस सरल शैली में व्यक्त किया वह अद्भुत है। सन् 1626 ई. में रहीम की मृत्यु हो गयी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. रहीम के काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता क्या है -

(अ) सामासिकता

(ब) शृंगारिकता

(स) नीति प्रवणता

(द) अनुभव संकुलता।

उत्तर: (स)

प्रश्न 2. विपत्ति में धन किसकी तरह लुप्त हो जाता है

(अ) प्रात:कालीन तारों की तरह

(ब) मित्र की तरह

(स) दुश्मन की तरह

(द) हवा की तरह

उत्तर: (अ)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. काज परे कछ और है,
काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी के भए,
नदी सिरावत मौर॥
प्रस्तुत दोहे के माध्यम से रहीम जी ने मनुष्य की किस प्रवृत्ति का वर्णन किया है? समझाइए।

उत्तर: प्रस्तुत दोहे के द्वारा रहीम ने मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति का परिचय कराया है। जब तक मनुष्य का किसी व्यक्ति या वस्तु से स्वार्थ सिद्ध होता है वह उसे बड़ा महत्त्व देता है और काम निकल जाने पर उसे ठुकरा देता है।

प्रश्न 2. कवि के अनुसार बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति कैसे अच्छे स्वभाव वाले व्यक्तियों की प्रवृत्ति को बदल नहीं पाते? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: कवि ने चंदन के वृक्ष और विषैले सर्पो का उदाहरण देते हुए बताया है कि अच्छे स्वभाव वाले व्यक्तियों पर बुरे स्वभाव वाले व्यक्तियों की संगति से कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार गंगा में मिलने वाला गंदा नाला, उसकी पवित्रता पर कोई प्रभाव नही डाल पाता।

प्रश्न 3. रहीम जी ने सज्जन व्यक्ति के रूठ जाने पर भी बार-बार मनाने की बात क्यों कही है।

उत्तर: रहीम के अनुसार एक सज्जन व्यक्ति, मोतियों के हार जैसा ही मूल्यवान और शोभा बढ़ाने वाला होता है। जब लोग मोती के हार के बार-बार टूटने पर भी उसे फेंक नहीं देते। उसे हर बार फिर से पिरोते हैं तो फिर

सज्जन को भी सौ बार रूठने पर मनाना ही बुद्धिमानी है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. " थोथे बादर क्वार के ……. पाछिली बात" प्रस्तुत दोहे का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रस्तुत दोहे का भाव है कि जब धनी व्यक्ति निर्धन हो जाता है तब वह आत्म प्रशंसा में बीते हुए समय की बातें करता है। जिस प्रकार क्वार (अश्विन) के महीने में बादल केवल गरजते हैं वो बरसते नहीं हैं। उनमें जल नहीं होता है, लेकिन वह जोर-जोर से गर्जना करके पिछले महीनों में की गई वर्षा की याद दिलाते हैं। वैसे ही धनी पुरुष निर्धन होने पर बीते हुए समय में किए गए अपने कार्यों की डींगे हांकते हैं।

प्रश्न 2. "नीति काव्य के क्षेत्र में रहीम का स्थान सर्वोपरि है।" इस कथन के विषय में अपने विचार लिखिए।

उत्तर: रहीम बचपन से ही साहित्य प्रेमी एवं प्रतिभाशाली थे। यह सामंजस्यवादी एवं उदार स्वभाव के थे। उन्होंने अपने जीवन के विस्तृत और गहन अनुभवों को सरल सुबोध भाषा में मार्मिकता से व्यक्त किया है। रहीम के काव्य में व्यवहार कुशलता, परोपकार, सज्जनता, स्वाभिमान, परदुखःकातरता, सत्संगति लोक व्यवहार आदि को लेकर सुंदर शिक्षा दी गई है, अतः नीति काव्य में रहीम का स्थान सर्वोपरि उल्लेखनीय है।

प्रश्न 3. रहीम ने अपने मन की व्यथा अपने मन तक ही सीमित रखने को क्यों कहा है?

उत्तर: रहीम ने मन की व्यथा को मन तक ही सीमित रखने के लिए इसलिए कहा है, क्योंकि जब हम अपनी मन की व्यथा को किसी दूसरे के सामने प्रकट करते हैं तो वे उसे सुनकर अठखेलियां करते हैं और फिर दूसरों के सामने उपहास करते हैं, जिनके सामने हम अपने मन की व्यथा को प्रकट करते हैं,

वह हमारी मन की व्यथा को कम नहीं करते हैं, बल्कि हमारा उपहास ही करते हैं।

प्रश्न 4. "माँगे घटत रहीम पद .....तऊ बावनै नाम।" । प्रस्तुत दोहे का कथन स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस दोहे में कवि ने माँगने या याचना करने से, मनुष्य की प्रतिष्ठा और पद कम होने के बारे में बताया है। देवताओं को उनका स्वर्ग राज्य पुनः दिलाने के लिए, विष्णु एक वामन (बौने) का वेश धारण करके दैत्यराज बलि से थोड़ी-सी भूमि माँगने गए। उन्होंने बलि से केवल तीन डग धरती माँगी। जब बलि देने को प्रस्तुत हो गए तो विष्णु ने अपने शरीर को इतना विराट कर लिया कि उनके दो डगों में सारी धरती नप गई और तीसरा डग फिर भी बाकी रही। कवि ने इस कथा द्वारा यही संकेत दिया है कि इतना विशाल आकार धारण करने पर भी विष्णु का नाम वामन अर्थात् बौना ही प्रसिद्ध हो गया। माँगने के कारण वह भगवान से याचक हो गये। अतः मनुष्य को अपना स्वाभिमान नहीं त्यागना चाहिए। हाथ नहीं फैलाना चाहिए।

सप्रसंग व्याख्याएँ

1. **रहिमन देखि बड़ेन को,**
   लघु न दीजिए डारि।
   जहाँ काम आवे सुई,
   कहा करे तलवारि॥
   एकै साधे सब सधै,
   सब साधे सब जाय।
   रहिमन मूलहिं सचिबो,
   फूलै फलै अघाय॥

कठिन शब्दार्थ- बड़ेन को = बड़ों को। **लघु** = छोटा। **नदीजिए डारि** = त्याग मत कीजिए। **साधे** = साधना, ध्यान देना। **मूलहिं** = जड़ को। **सचिबो** = सींचना। **फूलै-फलै** = फलता-फूलता है। **अघाय** = भरपूर, मनचाहा।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके

रचयिता कवि **रहीमदास** हैं।इन दोहों में कवि ने छोटे लोगों के महत्त्व को तथा एक लक्ष्य पर ध्यान दिए जाने का महत्त्व समझाया गया है।

व्याख्या-कवि छोटे का महत्त्व समझाते हुए कहते हैं कि इस बड़ों को देख कर के छोटो का त्याग नहीं करना चाहिए। क्योंकि छोटी वस्तु भी बड़े काम कर सकती है। जो काम छोटी वस्तु करती है वह बड़ी वस्तु नहीं कर पाती है। कवि ने सुई और तलवार का उदाहरण देकर समझाया है कि जो काम सुई कर सकती है वह काम तलवार कभी नहीं कर सकती है। अतः हमें कभी भी छोटी वस्तु को त्यागना नहीं चाहिए बल्कि उसके उपयोग और महत्व को समझना चाहिए।

कवि कहता है कि एक के साधनों से ही सब सब जाए ऐसा कार्य करना चाहिए, अर्थात एक देव को प्रसन्न करने से सभी देव प्रसन्न हो जाएं ऐसी साधना हमें करनी चाहिए। यदि हम सभी को साधने का अर्थात प्रसन्न करने का प्रयास करेंगे तो सभी हमसे दूर हो जाएंगे। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए कवि ने माली का उदाहरण लिया है कि जिस तरह से माली वृक्ष की केवल जड़ को ही सींचता है और जड़ को सींचने से ही वृक्ष अत्यधिक फल फूल देता है। उसी तरह से हमें भी केवल मूल रूपी ईश्वर की आराधना करनी चाहिए।

विशेष-

(i) सुई और तलवार का उदाहरण प्रस्तुत कर कवि ने छोटों को महत्त्व बड़ी सहजता से स्थापित किया है। अत्यन्त छोटी सुई ही वस्त्रों को सिलकर सभी की शोभा बढ़ाती है। तलवार चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हो, इस काम को कदापि नहीं कर सकती। अतः जीवन में छोटों का भी बहुत महत्त्व है।

(ii) सरल और सरस ब्रज भाषा में कवि ने बड़ी व्यावहारिक सीख दी है।

(iii) शैली उपदेशात्मक और परामर्शपरक

है।

(iv) दृष्टान्त अलंकार का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

2. कदली, सीप,
भुजंग-मुख, स्वाति एक गुनं तीन।
जैसी संगति बैठिए,
तै सोई फल दीन॥
काज परे कछ और है,
काज सरै कछु और।
रहिमन भंवरी के भए,
नदी सिरोवत मौर॥

कठिन शब्दार्थ- कदली = केला। **सीप** = एक कीट निर्मित खोल जिसमें मोती बनता है। **भुजंग** = सर्प। **स्वाति** = एक नक्षत्र जिसके होते हुए वर्षा की बूंद विभिन्न रूप धारण करती है। **संगति** = साथ। **बैठिए** = रहोगे। **तैसौई** = वैसा ही। **दीन** = प्राप्त होता है। **काज** = काम। **परै** = पड़ने पर। **कछु और** = कुछ और ही (व्यवहार)। काज सरै = काम निकल जाने पर। **भँवरी** = भाँवर, अग्नि की परिक्रमा। **सिरावत** = बहाते हैं, विसर्जित करते हैं। **मौर** = दूल्हे द्वारा सिर पर धारण किए जाने वाला मुकुट।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। इन दोहों में कवि ने क्रमश: संगति के प्रभाव और संसार में स्वार्थपूर्ण व्यवहार पर व्यंग्यमय टिप्पणी की है।

व्याख्या- प्रस्तुत दोहे में कवि ने संगति के प्रभाव को बताया है कि व्यक्ति जैसी संगति में रहता है वैसा ही उस पर प्रभाव होता है। जिस तरह से स्वाति नक्षत्र के जल की एक बूंद अलग-अलग स्थानों पर गिरने से अलग-अलग परिणाम होते हैं। स्वाति नक्षत्र के जल की बूंद केले पर गिरती है तो कपूर बन जाती है, सीपी में गिरने से मोती बन जाती है और सर्प के मुख में गिरने से वह विष बन जाती है। ठीक उसी

प्रकार मनुष्य जैसी संगत में रहेगा वैसा ही उसका स्वभाव हो जाएगा।

कवि स्वार्थी और मतलबी लोगों पर व्यंग्य करते हुए कहता है कि जब ऐसे लोगों को किसी से कोई काम होता है तो वह रात बड़ा मान सम्मान करते हैं, लेकिन जब काम निकल जाता है तो वे उसे पूछते भी नहीं है। जैसे विवाह के समय दूल्हा अपने सिर पर मोर अर्थात सेहरा या मुकुट बांधता है लेकिन जैसे ही विवाह संपन्न हो जाता है, उस मोर का कोई काम नहीं होता है तो दूल्हा उसे जल में प्रवाहित कर देता है। ऐसे ही स्वार्थी लोग होते हैं।

विशेष-

(i) जीवन में संगति के प्रभाव को कवि ने बड़े प्रभावशाली ढंग से समझाया है। कवि का सन्देश है कि सदा सत्संगति ही करनी चाहिए।

(ii) जीवन में स्वार्थपूर्ण व्यवहार को लेकर कवि ने बड़ा चुभता हुआ व्यंग्य किया है। 'काज परै कछु और है काज सरै कछु और', यह एक कठोर सचाई है। सुखी रहना है तो किसी से अधिक अपेक्षा मत करो; अन्यथा हृदय को धक्का लगेगा।

(iii) भाषा साहित्यिक और लक्षणा शक्ति सम्पन्न है।

(iv) शैली व्यंग्यात्मक तथा नीति की व्यावहारिक शिक्षा देने वाली है।

(v) दोनों दोहों में दृष्टान्त अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

3. जो रहीम उत्तम प्रकृति,
का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं,
लपटे रहत भुजंग॥
रूठे सुजन मनाइए,
जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए,
टूटे मुक्ताहार॥

कठिन शब्दार्थ-उत्तम = अच्छा। **प्रकृति** = स्वभाव। **का** = क्या। **करि सकत** = कर सकता है। **व्यापत** = व्याप्त होना,

प्रभावित करना। **भुजंग** = साँप। **सुजन** = सज्जन व्यक्ति। **फिरि-फिरि** = बार-बार। **पहिए** = पूँथिए। **टूटे** = टूट जाने पर। **मुक्ताहार** = मोतियों का हार।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। कवि ने उत्तम स्वभाव वाले व्यक्तियों पर कुसंग का प्रभाव न पड़ने की बात सप्रमाण कही है। कवि जीवन में सज्जनों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उनके सम्मान को बनाए रखने का परामर्श दे रहा है।

व्याख्या- कवि उत्तम स्वभाव वाले मनुष्यों की विशेषता प्रकट करते हुए कहता है कि, उत्तम स्वभाव के व्यक्ति चाहे कुसंगति में रहे, लेकिन कुसंगति का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। चंदन के वृक्ष का उदाहरण देते हुए कवि कहता है कि जिस प्रकार चंदन के वृक्ष पर सांप लिपटे रहते हैं, लेकिन चंदन विषैला नहीं होता है। वैसे ही उत्तम प्रकृति के लोग होते हैं उन पर कुसंगति का कोई प्रभाव नहीं होता है।कवि रहीम का परामर्श है कि यदि सज्जन किसी बात पर रूठ जाएँ तो सौ बार भी उनको मनाने का प्रयास करना चाहिए। सज्जनों की मित्रता बहुत मूल्यवान होती है। मोतियों का हार जितनी भी बार टूटता है, उसे हर बार फिर से पिरोने या गूंथने का यत्न किया जाता है। जैसे मूल्यवान मोती के हार को टूट जाने पर फेंका नहीं जा सकता, उसी प्रकार सज्जन पुरुषों की मूल्यवान मित्रता की रक्षा करना भी परम आवश्यक है।

विशेष-

(i) जिनका स्वभाव उत्तम होता है, वे बुरी संगति से अप्रभावित रहते हैं और अपने स्वभाव से दूसरों को लाभ पहुँचाया करते हैं। चंदन सर्यों के विष से तनिक भी प्रभावित नहीं होता, अपितु अपनी मधुर गन्ध से अन्य वृक्षों को सुवासित

करता रहता है। यही दोहे का सन्देश है।

(ii) सज्जनों का साथ सौभाग्यशालियों को प्राप्त होता है। अत: उसे किसी कीमत पर नहीं आँवाना चाहिए। सज्जनों की मित्रता मोती के हार जैसा ही मूल्यवान और अपरिहार्य होती है। यही समझाना कवि का उद्देश्य है।

(iii) तत्सम तथा तद्भव शब्दों के सुमेल से युक्त सक्षम ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) शैली दृष्टान्तपरक और सन्देशात्मक है।

(v) का करि सकत कुसंग" में अनुप्रास, 'फिरि-फिरि' में पुनरुक्ति तथा दोनों दोहों में दृष्टान्त अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

4. तरुवर फल नहिं खात हैं,
सरबर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर-काज हित,
संपति सँचहिं सुजान॥
थोथे बादर क्वाँर के,
ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भये,
करै पाछिली बात॥

कठिन शब्दार्थ- तरुवर = वृक्ष। **सरबर** = सरोवर, तालाब। **पान** = पानी। **पर-काज** = दूसरों के काम के लिए, परोपकार के लिए। **संपति** = धन। **सँचहि** = एकत्र करते हैं। **सुजान** = सज्जन, श्रेष्ठ पुरुष। **थोथे** = जल रहित। **बादर** = बादल। **क्वाँर** = वर्षा ऋतु का अन्तिम मास। **घहरात** = घुमड़ते हैं। **निर्धन** = धनहीन, गरीब। **पाछिली** = पिछली, सम्पन्नता के समय की।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। इन दोहों में कवि ने परोपकारी महापुरुषों की प्रशंसा की है तथा धनी से निर्धन हो जाने वाले लोगों के पुरानी बातें बखानने के स्वभाव पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या-कवि कहता है कि प्रकृति हमें परोपकार का आदर्श स्वरूप समझाती आ रही है। उसके वृक्ष अपने फलों को स्वयं नहीं खाते वे दूसरों के ही काम आते हैं। इसी प्रकार तालाब अपना जल स्वयं नहीं पीते। उनसे मनुष्य, पशु, पक्षी, वृक्ष और खेतों की प्यास बुझा करती है। यही बात सज्जनों पर भी लागू होती है। वे भी केवल परोपकार के लिए संपत्ति का संचय किया करते हैं। उनके धन का लाभ दूसरे ही उठाया करते हैं।

रहीम कहते हैंवर्षा ऋतु के अन्तिम मास क्वार (आश्विन) में घुमड़ने वाले जलरहित बादल बरसते नहीं। केवल घुमड़कर और गरजकर रह जाते हैं। इसी प्रकार जो धनी व्यक्ति निर्धन हो जाता है, वह अपने धन-सम्पन्नता के दिनों की बातें बढ़-चढ़कर किया करती है। वह वास्तविकता को भुलाकर व्यर्थ के अहंकार में फंसा रहता है।

विशेष-

(i) कवि ने परोपकारियों के स्वभाव और आचरण को सराहा है। जिसकी सम्पत्ति अभावग्रस्तों के काम आए, वही सच्चा परोपकारी है और प्रशंसा का पात्र है।

(ii) क्वार के बादलों की दृष्टान्त देते हुए कवि रहीम ने धन के अहंकार को दिल से लगाए रखने वाले, निर्धन हो गए लोगों पर बड़ा कटीला व्यंग्य किया है।

(iii) भाषा पर कवि रहीम का सहज अधिकार प्रकट हो रहा है। सरल शब्दों में गहरी बात कहने का कौशल है।

(iv) कवि की व्यंग्यपटुता प्रशंसनीय है।

(v) 'संपति सँचहि सुजान' अनुप्रास अलंकार तथा दोनों में दृष्टान्त अलंकार है।

5. रहिमन अँसुआ नैन ढरि,
जिय दुःख प्रकट करे।
जाहि निकारो गेह ते,
कस न भेद कहि देइ॥
रहिमन निज मन की बिथा,

मन ही राखो गोय।

सुनि अठिलैहैं लोग सब,

बाँटि न लैहैं कोय॥

कठिन शब्दार्थ-अँसुआ = आँसू। **नैन** = नेत्र। **ढरि** = ढुलककर। **जिय** = हृदय। **करेइ** = करते हैं। **जाहि** = जिसे। **निकारो** = निकालोगे। **गेह** = घर। **ते** = से। **कस न** = क्या नहीं। **भेद** = गुप्त बातें। **निज** = अपने। **बिथा** = व्यथा, कष्ट। **गोय** = छिपाकर। **अठिलैहैं।** = इठलाएँगे, हँसी उड़ाएँगे। **बाँटि न लैहैं** = बाँटेगा नहीं। **कोय** = कोई॥

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। नेत्रों से ढलने वाले आँसुओं को थाम के रखो, नहीं तो ये तुम्हारे मन का हाल उजागर कर देंगे। मन की व्यथा मन में छिपाकर रखना बुद्धिमानी है। ये उपयोगी सीखें कवि ने इन दोहों में दी हैं।

व्याख्या- कवि रहीम कह रहे हैं कि नेत्रों से ढुलकने वाले आँसू मन के दु:ख को प्रकट कर देते हैं। स्वाभिमानी व्यक्ति को मन का दु:ख मन में ही रखना चाहिए। जब तुम किसी को घर से निकालोगे तो वह घर के सभी भेद दूसरों के सामने प्रकट कर देगा। इसलिए रोओ मत धैर्य के साथ दु:ख के दिनों को काट लो।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कवि कहता है-अपने मन की व्यथा को मन में ही छिपाकर रखना बुद्धिमानी है। उसे यदि दूसरों के सामने प्रकट करोगे तो सच्ची सहानुभूति व्यक्त करने वाले कम और उसकी हँसी उड़ाने वाले अधिक मिलेंगे। इससे मन और भी अधिक दुखी होगा।

विशेष-(i) कवि ने मन के दु:ख को मन में ही छिपाकर रखने का जो परामर्श दिया है। वह बड़ा व्यावहारिक है। स्वाभिमानी व्यक्ति को दु:ख के दिन गम्भीरता और धैर्य के साथ चुपचाप

बिता लेने चाहिए।

(ii) इसके साथ ही घर की बात घर में ही रहे, उपहास का कारण न बने, इसके लिए सावधानी रखनी चाहिए। घर के सभी सदस्यों के सम्मान और आकांक्षाओं को उचित समर्थन और आदर दिया जाना चाहिए, यह सन्देश भी कवि दे रहा है।

(iii) भाषा सरल तथा शब्द चयन भावों के अनुकूल है।

(iv) कथन शैली परामर्शपरक है।

(v) दृष्टान्त अलंकार का सुन्दर प्रयोग है।

6. दीन संबन को लखत है,
दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै,
दीनबंधु सम होय॥
दोनों रहिमन एक से,
जौ लौं बोलत नाहिं।
जोन परत हैं काक पिक,
ऋतु बसन्त के माँहिं॥

कठिन शब्दार्थ-दीन = निर्धन। लखत = देखता। दीनहिं = दीन को। दीनबंधु = ईश्वर, दीनों का सहायक। जौ लौं = जब तक। जान परत = पहचाने जाते हैं। काक = कौआ। पिक = कोयल। माँहिं = में।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। कवि दीनों की सहायता करने वाले को ईश्वर के तुल्य बता रहा है। वह कहता है कि जब तक बोलते नहीं, तब तक गुणयुक्त और गुणहीन व्यक्ति की पहचान नहीं हो पाती है।

व्याख्या-दीन व्यक्ति सहायता के लिए सभी की ओर ताकता है किन्तु उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। जो व्यक्ति दीन की सहायता करता है, उसे दीनबन्धु ईश्वर के समान ही समझना चाहिए।

रहीम कहते हैं कि कौआ और कोयल

जब तक बोलते नहीं हैं, तब तक वे एक जैसे प्रतीत होते हैं। जब बसन्त ऋतु आने पर कोयल कूकती है और कौआ काँव-काँव करता है तो तुरन्त ज्ञात हो जाता है कि इनमें से कौआ (गुणहीन) कौन है और कोयल (गुणवान) कौन है।

विशेष-

(i) जिसका सहायक या रक्षक कोई नहीं होता भगवान स्वयं उनकी सहायता करते हैं। अत: दोनों की रक्षा और सहायता करने वाला मनुष्य ईश्वर के तुल्य सम्मानीय होता है। कवि का यही सन्देश है।

(ii) गुणवान जैसा रंग-रूप बना लेने से कोई गुणवान नहीं हो जाता। उसकी वाणी उसकी वास्तविकता प्रकट कर देती है। गुणी व्यक्ति की वाणी स्वाभाविक रूप से मधुर और शिष्ट होती है और पाखण्डी व्यक्ति की वाणी बनावटी और निम्न स्तर की हुआ करती है। वाणी के स्तर से व्यक्ति की सही पहचान हो जाती है।

(iii) कवि ने दीन-हीन और दुर्बलों की सहायता करने का तथा गुणी बनने का सन्देश दिया है।

(iv) सरल भाषा में कवि ने प्रशंसनीय जीवन मूल्यों की ओर ध्यान आकर्षित किया है।

(v) शैली भावात्मक तथा प्रतीकात्मक है।

7. बड़े बड़ाई ना करें,
बड़ो न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै,
लाख टका मेरो मोल॥
बिगरी बात बनै नहीं,
लाख करौ किन कोय।
रहिमन फाटे दूध को,
मथे न माखन होय॥

कठिन शब्दार्थ-बड़े = महान् लोग, विनम्र लोग। **बड़ाई** = अपनी प्रशंसा। **बड़ौ** = बढ़ा-चढ़ाकर। **बोल** = कथन, बात। **लाख टका** = लाखों रुपये। **मोल** = मूल्य। बिगरी **बात** = सम्माने का नष्ट

हो जाना। **बनै** = फिर से सुधारना।

लाख करौ = कितना ही प्रयत्न करो।

कोय = कोई। **फाटे** = फट जाने पर।

मथे = मथने पर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। इनमें कवि ने आत्मप्रशंसा करने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है तथा व्यक्ति के आत्मसम्मान को बड़ा महत्त्वपूर्ण बताया है।

व्याख्या- कवि कहता है जो लोग वास्तव में गम्भीर स्वभाव वाले और महान होते हैं, वे कभी अपने ही मुख से अपनी बड़ाई नहीं करते। वे अहंकारपूर्वक ऊँची-ऊँची बातें नहीं किया करते। हीरा अत्यन्त मूल्यवान रत्न होता है किन्तु वह कभी नहीं कहता कि उसका मूल्य लाखों में है। उसके गुणों ने ही उसे लोकप्रिय और मूल्यवान बनाया है। स्वाभिमानी लोग कभी अपनी बात या प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने देते क्योंकि यदि एक बार समाज में सम्मान कम हो गया तो फिर उसे पुन: प्राप्त कर पाना असम्भवसा हो जाता है। यदि असावधानी से दूध फट जाता है, तो फिर उसे कितना भी मथो, उससे मक्खन नहीं निकल सकता।

विशेष-

(i) अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करने वाले लोग 'बड़बोले और शेखीखोर' कहे जाते हैं।

(ii) अपने आत्मसम्मान को बचाने का कवि ने संदेश दिया है।

(iii) सरल भाषा में कवि ने बहुत उपयोगी संदेश दिए हैं।

(iv) कथन शैली सचेत करने वाली और उपदेशात्मक है।

(v) दोहों में 'अनुप्रास' तथा दृष्टांत अलंकार का प्रयोग हुआ है।

8. विपति भए धन ना रहै,
रहे जो लाख करोर।
नभ तारे छिपि जात हैं,

ज्यों रहीम भए भोर॥
माँगे घटत रहीम पद,
कितौ करौ बढ़ि काम।
तीन पैग बसुधा करो,
तऊ बावनै नाम॥

कठिन शब्दार्थ-विपति = विपत्ति, संकट। **करोर**= करोड़ों। **नभ** = आकाश। **भोर** = सबेरा। **कितौ** = कितना भी। **बढ़ि** = बडा। **पैग** = डग, कदम। **वसुधा** = पृथ्वी। **तऊ** = तो भी। **वामनै** = बौना ही।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं।कवि बता रहा है कि संकट या बुरे दिन आने पर मनुष्य का वक्त भी उसका साथ छोड़ जाता है। माँगने जाने वाले मनुष्य की प्रतिष्ठा अवश्य ही कम हो जाती है। चाहे वह कितना भी बड़ा काम क्यों न कर दिखाए।

व्याख्या- जब मनुष्य के बुरे दिन आते हैं तो उसके पास चाहे लाखों या करोड़ों भी क्यों न हों, सब समाप्त हो जाते हैं। धन भी उसका साथ नहीं देता। सब देखते हैं कि जब सबेरा होने लगता है तो आकाश में असंख्य तारे भी छिप जाते हैं। आकाश भी साथ नहीं देता। मनुष्य चाहे कितना बड़ा या आश्चर्यजनक काम क्यों ने कर दिखाए किन्तु माँगने, हाथ फैलाने पर उसका पद और प्रतिष्ठा अवश्य ही कम हो जाती है। स्वयं भगवान भी जब बलि से दान लेने गए तो उन्होंने भी तीन डग में सारी पृथ्वी नाप डाली, परन्तु इतना महान कार्य करने पर भी उनका नाम 'वामन' (बौना) ही रहा।

विशेष-

(i) प्रथम दोहे में कवि रहीम का अपना ही कुछ अनुभव झलक रहा है। रहीम बहुत बड़े दानी थे। उन पर बहुत सम्पत्ति थी। परन्तु उन पर जब संकट आया तो वह भी भिखारी हो गए।

(ii) भगवान देवताओं के हित के लिए दैत्यराज बलि से वामन (बौने) का रूप बनाकर तीन डग धरती माँगने गए थे। जब बलि ने उन्हें देना स्वीकार कर लिया तो उन्होंने विराट रूप धारण करके तीनों लोक तीन डगों से नाप डाले। इतना आश्चर्यजनक कार्य करने

(परम विराट रूप धारण करने) पर भी उन्हें वामनावतार ही कहा जाता है। कवि ने संदेश दिया है कि मनुष्य को कभी किसी के सामने हाथ नहीं फैलाना चाहिए।

(iii) दोनों ही दोहों में कवि रहीम के अनुभवों और हिन्दू धर्म ग्रन्थों के अध्ययन का प्रमाण प्रस्तुत हुआ है।

(iv) भाषा पर कवि का पूर्ण अधिकार है। कथन शैली रोचक और प्रभावशाली है।

(V) दोहों में अनुप्रास तथा दृष्टांत अलंकार हैं।

9. मान सहित बिस खाय के,
संभु भये जगदीश।
बिना मान अमृत पिये,
राहु कटायौ सीस॥
रहिमन जिह्वा बाबरी,
कहि गई सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।

कठिन शब्दार्थ- मान = सम्मान। **बिस** = जहर। **संभु** = शिव। **जगदीश** = जगत के स्वामी। **राहु** = एक दैत्य, जिसने कपटपूर्वक अमृत पिया था। **जिह्वा** = जीभ। **बाबरी** = मूर्ख। **सरग-पताल** = अनुचित बातें, अशोभनीय कथन। **जूती** = जूता। **कपाल** = सिर।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। इनमें कवि ने अपमान सहित होने वाले, महान लाभ को भी तुच्छ बताया है तथा बोलते समय वाणी पर संयम रखने का परामर्श दिया है।

व्याख्या- समुद्र मंथन से प्राप्त विष का सम्मान सहित पान करने पर भगवान शिव सारे जगत के रक्षक जगदीश' कहलाए। परन्तु देवताओं के बीच छिपकर 'अमृत' पीने वाले राहु नामक दैत्य को अपना सिर कटवाना पड़ गया। रहीम कहते हैं कि यह जीभ बड़ी नादान है, यह बोलते समय कुछ भी अनुचित और अनर्गल बोल जाती है और उसका दुष्परिणाम बेचारे सिर को भोगना पड़ता है। आशय यह है कि वाणी के असंयम का अपमानजनक फल-जूतियाँ पड़ना- मनुष्य को भोगना पड़ता है। अत: बोलते समय बहुत सतर्क रहना चाहिए।

विशेष-

(i) प्रथम दोहे में कवि ने समुद्र मंथन' की प्रसिद्ध पौराणिक घटना का संदर्भ लेते हुए स्वाभिमानपूर्वक जीवन बिताने का संदेश दिया है। चाहे इसके लिए कितना भी मूल्य चुकाना पड़े। कवि का मत है कि मान सहित विष पी लेना अपमानपूर्वक अमृत पाने करने से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

(ii) कवि ने दूसरे दोहे में बोलते समय बहुत संयम और सावधानी बरतने का परामर्श दिया है। अन्यथा 'करे कोई भरे कोई' जैसा दुष्परिणाम सामने आता है। जीभ अपराध करती है और बेचारे सिर को जूते खाने पड़ते हैं।

(iii) मुसलमान होते हुए भी हिन्दू पौराणिक ग्रन्थों का अध्ययन और उनके संदर्भो का रचनाओं में उपयोग करना रहीम के उदार व्यक्तित्व का प्रशंसनीय प्रमाण है।

(iv) साहित्यिक ब्रज भाषा का कुशल प्रयोग हुआ है।

(v) कथन शैली बहुत प्रभावशाली है। उद्धरणात्मक और व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग है।

10. अमृत ऐसे वचन में,
रहिमन रिस की गाँस।
जैसे मिसिरिह में मिली,
निरस बाँस की फाँस॥

कठिन शब्दार्थ- अमृत से = मधुर। **रिस** = क्रोध। **गाँस** = गाँठ, अप्रिय मेल। **मिसिरिहु** = मिश्री में भी। **निरस**= रसहीन, फीकी। **फाँस** = बारीक तिनको, शरीर में चुभ जाने वाला

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक में संकलित है **नीति के दोहे** पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता कवि **रहीमदास** हैं। इस दोहे में कवि ने वाणी को मधुर बनाए रखने और अप्रिय शब्दों के प्रयोग से बचने का परामर्श दिया है।

व्याख्या- रहीम कहते हैं कि व्यक्ति को सदा मधुर और विनम्र वाणी का प्रयोग करना चाहिए। कर्णप्रिय, मृदुल बोली में कटु शब्दों का प्रयोग उसी प्रकार खटकने वाला प्रतीत होता है जैसे मधुर मिश्री में बाँस के नीरस महीन रेशों का उपस्थित रहना॥

विशेष-

(i) कवि ने मिश्री के निर्माण की प्रक्रिया

का ज्ञान जताते हुए, सदा विनम्र, कर्णप्रिय और शिष्ट वाणी के प्रयोग का परामर्श दिया है।

(ii) मिश्री बनाते समय, उसमें रबे बनाने के लिए बाँस की बारीक नसों या फाँसों का प्रयोग किया जाता है।

(iii) दोहा कवि की बहुज्ञता का प्रमाण दे रहा है।

(iv) भाषा-शैली रोचक है।

(v) दोहे में 'निरस बाँस की फाँस' में अनुप्रास तथा 'उदाहरण' अलंकार है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg